



कड़कनाथ मुर्गीपालन से आय

ब्रजकिशोर प्रजापति*, मृगेन्द्र सिंह**, अल्पना शर्मा***, दीपक चौहान**** और भागवत प्रसाद पंडु*****

॥ भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा खेती और पशुपालन से अपनी आजीविका का प्रबंध करने में विश्वास रखता है। वर्तमान समय में एक तरफ बढ़ती हुई आबादी को पोषणयुक्त आहार की कमी एवं दूसरी तरफ जलवायु परिवर्तन के दौर में किसानों को कम उपज, आय एवं रोजगार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। अतः कृषकों को समृद्धि एवं खुशहाली लाने के लिए समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाना होगा। कृषि से संबंधित उद्यमों जैसे-मछली पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, केंचुआ खाद उत्पादन, मुर्गी पालन एवं जापानी बटेर पालन को कृषि में समायोजित कर आय दोगुनी की जा सकती है। इन्हीं उद्यमों में कड़कनाथ पालन भी एक है। वर्तमान परिस्थिति एवं बाजार आकलन के आधार पर आने वाले समय में कड़कनाथ की बाजार मांग अत्यधिक बढ़ने की संभावना है। शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए कड़कनाथ पालन में रोजगार की अपार मौके निहित हैं। पढ़े-लिखे नौजवानों एवं सेवानिवृत्त कर्मियों की रुचि कड़कनाथ पालन में बढ़ने से व्यावसायिक एवं एकीकृत कड़कनाथ पालन के मॉडल भी विकसित हो रहे हैं। प्रस्तुत लेख में ऐसे ही एक कड़कनाथ पालक किसान की सफलता की कहानी है। अन्य किसान भी इनसे प्रेरणा लेकर स्वावलंबी बन सकते हैं। ॥

*वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान; **प्रधान वैज्ञानिक, उद्यानिकी; ***वैज्ञानिक, गृह विज्ञान; ****वैज्ञानिक, कृषि अभियांत्रिकी; *****तकनीकी सहायक; कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (मध्य प्रदेश)

कृषक अन्य कुक्कुट पालन की तरह ही कड़कनाथ मुर्गी का पालन कर कम समय एवं कम लागत में अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। कड़कनाथ की सबसे प्रमुख खासियत इसका काला रंग है, जो कि मेलैनिन

की अधिकता के कारण होता है। इन पक्षियों के पंख, पैर, पैर के नाखून, चोंच, मांस और हड्डियां और यहां तक कि आंतरिक अंग भी काले रंग के होते हैं। इसका मांस सेहत के लिए फायदेमंद होता है। इसके मांस में

कड़कनाथ ने बनाया मालामाल

जनपद शहडोल (मध्य प्रदेश) के जयसिंह नगर विकास खंड में आदिवासी बाहुल्य एक गांव मीठी है। यह गांव जिला मुख्यालय से 80 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन परंपरागत कृषि है। इसी गांव के आदिवासी कृषक श्री शिवचरण सिंह (उम्र 35 वर्ष) (पिता रामफल सिंह) हैं। इनके पास कुल 1.5 एकड़ भूमि है। ये भी अन्य कृषकों की भांति परम्परागत खेती करते थे। इस खेती में इन्हें लागत ज्यादा और मुनाफा कम प्राप्त होता था। इन्होंने खेती के साथ-साथ घर के पिछवाड़े में कड़कनाथ पालन करने का कार्य, वर्ष 2018-19 में प्रारम्भ किया। परन्तु तकनीकी ज्ञान के अभाव में पूर्णतः सफल नहीं हो सके। कुछ महीनों तक पालने के बाद वह इस व्यवसाय को छोड़कर वापस अपनी पुरानी दिनचर्या में लग गए। श्री सिंह ने

सारणी 1: आय-व्यय का विवरण

विवरण	आय-व्यय (रुपये)
परिवहन सहित खर्च (200 नग चूजे × 70 रुपये/नग)	14000/-
भूसा	100/-
दवा (एंटीबायोटिक, लीवर टॉनिक, विटामिन)	1000/-
आहार (900 कि.ग्रा. × 30 प्रति/कि.ग्रा.)	27000/-
बिजली खर्च	500/-
श्रमिक खर्च	3000/-
कुल व्यव	45600/-
बिक्री 7-8 महीने (180 पक्षी, औसतन शारीरिक भार 1.3 कि.ग्रा. × 450 रुपये/कि.ग्रा.)	105300/-
अंडे (250 नग × 10 रुपये/नग)	2500/-
कुल आमदनी	107800/-
शुद्ध लाभ	62200/-

एंटीबायोटिक, इलेक्ट्रोलाइट, विटामिन 'बी' कॉम्प्लेक्स, 'सी', 'ई', 'के' और 'डी' दिए। चूजों को गर्मी के लिए घर में 18-20 घंटे प्रकाश की सुविधा एवं दाने को नुकसान से बचाने के लिए दाना फीडर में तीन चौथाई भरना शुरू किया। इसके अतिरिक्त श्री सिंह ने आहार के रूप में अजोला का प्रयोग कर पक्षियों के औसत भार तथा अण्डा उत्पादन में वृद्धि पाई। उपरोक्त तकनीक को अपनाकर 180 नग कड़कनाथ 7-8 महीने में औसतन 1.3 से 1.7 कि.ग्रा. वजन के पक्षियों एवं 250 अंडे को बाजार में विक्रय कर 62,200 रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इस प्रकार वर्ष 2021-22 में कड़कनाथ पालन करके लगभग कुल आमदनी 1,07,800 रुपये हुई, जिसका आय-व्यय का विवरण सारणी में दिया गया है। श्री सिंह न सिर्फ खेती के साथ कड़कनाथ पालन कर रहे हैं, बल्कि अन्य शिक्षित ग्रामीण युवाओं को इसके लिए प्रोत्साहित कर रोजगार भी उपलब्ध करवा रहे हैं। कड़कनाथ पालन के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि कड़कनाथ पालन वर्तमान जलवायु परिवर्तन परिवेश में एक सफल व्यवसाय है। इसे भूमिहीन एवं सीमांत किसानों द्वारा कम लागत एवं विशेष तकनीकी ज्ञान से शुरू कर अपनी आय को बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए आवश्यकता है, तो बस इच्छा शक्ति और कुशल प्रबंधन क्षमता विकसित कर पहला कदम बढ़ाने की।



कड़कनाथ पोल्ट्री

असामान्य मासिक धर्म और आकस्मिक गर्भपात के इलाज में किया जाता है। उपरोक्त स्वास्थ्यवर्धक गुणों के कारण कड़कनाथ के मांस एवं अंडों की मांग देश व विदेश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह भारतीय नस्ल का मुर्गा है, जिसका औसत शारीरिक भार 1.5 से 2 कि.ग्रा. है और वयस्क मुर्गी का वजन 1 से 1.5 कि.ग्रा. होता है। कड़कनाथ मुर्गियां 6 महीने बाद से अंडे देना शुरू कर देती हैं और सालाना 80 से 90 अंडे देती हैं। क्षेत्रीय भाषा में कड़कनाथ को कालामांसी भी कहा जाता है। यह मुख्यतः पश्चिमी मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार जिलों में पाया जाता है। मुख्य रूप से भील और भिलाला जनजातीय समुदायों द्वारा यह पाला जाता है। कड़कनाथ के कारण मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की पहचान आज देशभर में हो रही है। भारत सरकार द्वारा 30 जुलाई, 2018 को झाबुआ (मध्य प्रदेश) कड़कनाथ के मांस के लिए भौगोलिक संकेतक (जीआई टैग) द्वारा अनुमोदित किया गया है। यह काफी सरल है। इसमें मुर्गियों को कम देखभाल और ज्यादा वैक्सीन की जरूरत नहीं होती है। इसे विभिन्न प्रकार की जलवायु में आसानी से पालन किया जा सकता है। भूमिहीन निर्धन किसानों के पास अधिक निवेश के लिए पूंजी नहीं होती है, वे कम लागत में एवं कम जगह में कड़कनाथ पालन करके परिवार की आय को बढ़ा सकते हैं। प्रारंभिक निवेश, कुक्कुट पालन एवं खेती की तुलना में बहुत कम होता है। इसलिए यह भूमिहीन एवं सीमांत किसानों के लिए उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त भारत में पोषण एवं खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सकती है। यह उन क्षेत्रों में रोजगार भी प्रदान कर सकता है, जहां मुख्य रूप से ग्रामीण आबादी निवास करती है।

अन्य चिकन के मुकाबले में उच्च प्रोटीन और न्यूनतम वसा पाये जाते हैं। इसका मांस एवं अंडा कैंसर, डायबिटीज, हृदय रोगियों के

लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। आदिवासी समुदायों द्वारा कड़कनाथ का उपयोग पुरुषों की दुर्बलता एवं महिलाओं में बांझपन,